मूल्यांकन [EVALUATION]

मूल्यांकन का सम्प्रत्यय (concept of Evaluation)

आधुनिक काल में मूल्यांकन मनोविज्ञान शिक्षा की महत्वपूर्ण देन है। बिना मूल्यांकन के शिक्षा तथा मनोविज्ञान ही नहीं बल्कि मानव मात्र का समग्र जीवन ही व्यर्थ प्रतीत होने लगता है। मूल्यांकन एक विस्तृत व निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जहाँ कि किसी माप की उपयोगिता के सम्बन्ध में निर्णय या मूल्य प्रदान किया जाता है।

मूल्यांकन के अन्तर्गत किसी गुण योग्यता या विशेषता का मूल्य निर्धारित किया जाता है अर्थात मूल्यांकन द्वारा परिमाणात्मक तथा गुणात्मक दोनों ही प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। जिनके आधार पर बालक की योग्यता व उपलब्धियों का आकलन किया जाता है। मूल्यांकन के शाब्दिक अर्थ को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है—

मूल्यांकन = मापन + मूल्य निर्धारण

Evaluation = Measurment + Value judgement

(Quantitative) (Qualitative)

इस प्रकार मूल्यांकन का आशय मापन के साथ-साथ मूल्य निर्धारण से है अर्थात अधिगम अनुभवों द्वारा विद्यार्थी में अपेक्षित व्यवहार

परिवर्तन किस सीमा तक हुए? इसका मूल्य (मूल्यांकन) निर्धारण करके निर्णय देता है। अतः मापन मूल्यांकन का ही एक भाग है जो सदैव उसमें निहित रहता है।

NCERT दिल्ली की पुस्तक 'Concept of Evaluation' के अनुसार मूल्यांकन प्रक्रिया में मुख्यतः तीन बातों के सम्बन्ध में निर्णय किया जाता है—

I- शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई?
II- उद्देश्य स्पष्ट करने की विधि/प्रविधि कितनी प्रभावी रही?
III- अधिगम अनुभव कितने प्रभावी उत्पादक रहे?

उपरोक्त तीनों बिन्दु मिलकर मूल्यांकन प्रक्रिया को पूरा करते हैं। इन तीनों के सम्बन्ध को त्रिभुजाकार आकृति से निम्न प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है—

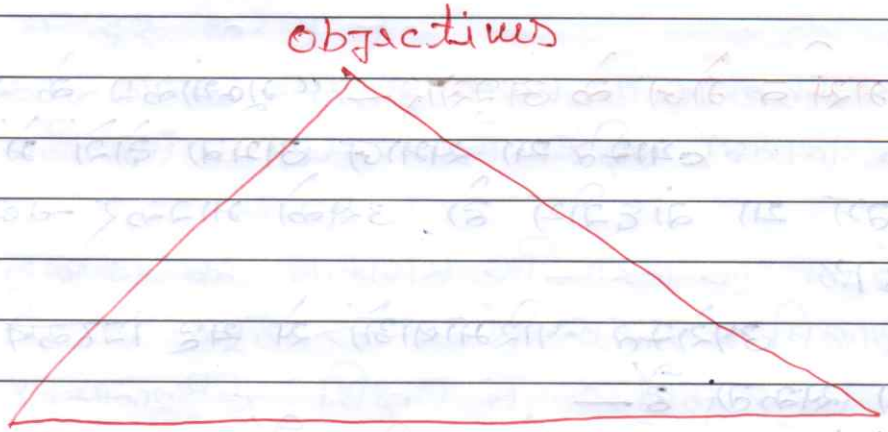

मूल्यांकन की परिभाषाएँ —

मूल्यांकन की परिभाषाएँ निम्न प्रकार दी जा सकती हैं-

I- गुड्स के शब्दों में — "मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे सही ढंग से किसी वस्तु का मूल्यांकन किया जाता है।"

II- डांडेकर के शब्दों में — " शैक्षिक उद्देश्यों को बालक द्वारा किस सीमा तक प्राप्त किया गया है, यह जानने की व्यवस्थित प्रक्रिया को ही मूल्यांकन की संज्ञा दी जाती है।"

III- क्विलेन व हन्ना के अनुसार — " विद्यालय द्वारा बालक के व्यवहार में लाये गये परिवर्तनों के सम्बन्ध में प्रमाणों के संकलन और उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया को मूल्यांकन कहते हैं।"

IV- रेमर्स व गेज के अनुसार — " मूल्यांकन के अन्दर व्यक्ति या समाज अथवा दोनों में जो उत्तम या वांछनीय हो, उसको मानकर चला जाता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है —

I- मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है।
II- मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।
III- मूल्यांकन का सम्बन्ध शिक्षा के उद्देश्यों से होता है।

यह शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की सीमा का निर्धारण करने वाली प्रक्रिया है।

iv- मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों के वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों के सम्बन्ध में साक्ष्यों (Avidences) का संकलन किया जाता है।

⇒ मूल्यांकन के उद्देश्य — PURPOSES OF EVALUATION —

मूल्यांकन के उद्देश्य निम्नलिखित प्रकार हैं—

1- शिक्षा के विस्तृत उद्देश्यों को स्पष्ट करना।
ii- पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन करना।
3- निर्देशन एवं परामर्श हेतु उचित आधार प्रदान करना।
4- परीक्षा प्रणाली में सुधार
5- समस्त विद्यालय कार्यक्रमों का मूल्यांकन करना। उनकी विशेषताओं व कमियों को इंगित करके उनकी कमियों को दूर करना।
6- बालकों के व्यवहार सम्बन्धी परिवर्तनों की जाँच करना
7- वैज्ञानिक व प्रभावशाली शिक्षण विधियों व प्रविधियों की जाँच करना।
8- बालकों की अधिगम कठिनाइयों का पता लगाना।
9- शिक्षण व्यूह रचना में सुधार व विकास करना।
10- उपचारात्मक शिक्षण में सहायता करना।
11- बालकों को उत्तम ढंग से सीखने हेतु प्रोत्साहित करना।

मूल्यांकन का वर्गीकरण

मूल्यांकन को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है, जिसका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है-

I- आन्तरिक मूल्यांकन (Internal Evaluation)
II- वाह्य मूल्यांकन (External Evaluation)
III- सतत मूल्यांकन (Continuous Evaluation)

I- आन्तरिक मूल्यांकन- आन्तरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत कक्षा-अध्यापक या विद्यालय के अध्यापक ही विद्यार्थीयों की मूल्यांकन साप्ताहिक, मासिक, अर्द्धवार्षिक व वार्षिक परीक्षाओं के आयोजन में करते हैं। यद्यपी यह सही है कि विद्यार्थियों का वास्तविक मूल्यांकन उस विद्यालय में पढ़ाने वाला शिक्षक ही कर सकता है क्योंकि वे छात्रों के साथ काफी समय से सम्पर्क में रहने के कारण उनकी रुचियों व क्षमताओं तथा उनके व्यक्तित्व के आन्तरिक व वाह्य पहलुओं से पर्याप्त रूप से परिचित होता है।

II- वाह्य मूल्यांकन- आन्तरिक मूल्यांकन में आत्मनिष्ठता का तत्व विद्यमान होने के कारण विद्यार्थीयों का वास्तविक मूल्यांकन सम्भव नहीं हो पाता है। अतः विभिन्न विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा पढ़ायी गयी विभिन्न कक्षाओं के समस्त विषयों की शैक्षिक उपलब्धि के मूल्यांकन

व परीक्षा के परिणामों के स्तर में एकरूपता लाने की दृष्टि से बाह्य मूल्यांकन की आवश्यकता महसूस की गयी। बाह्य मूल्यांकन के अन्तर्गत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व सत्रीय कार्य का मूल्यांकन निष्पक्ष एवं बाहरी परीक्षकों द्वारा कराया जाता है ताकि मूल्यांकन प्रक्रिया में विश्वसनीयता, वस्तुनिष्ठता, वैधता व उपयुक्तता के तत्व विद्यमान रहे। बाह्य परीक्षायें विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतियोगिता की दौड़ में आगे बने रहने के लिए प्रेरित करती है।

3- सतत मूल्यांकन – शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य है, विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना। इस उद्देश्य की प्राप्ति सतत व व्यापक प्रक्रिया द्वारा ही सम्भव है। इस प्रक्रिया के द्वारा बालक की शैक्षिक उपलब्धियों का ही मूल्यांकन नही किया जाता अपितु उसकी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आध्यात्मिक, अभिवृत्तियों का मूल्यांकन भी सम्भव होता है। सतत मूल्यांकन के अन्तर्गत शिक्षक व छात्र दोनों सक्रिय रहते हैं व उन्हें निरन्तर पृष्टपोषण (Feedback) मिलता रहता है। शिक्षक विद्यार्थियों की कमियों को जानकर अपनी शिक्षण प्रविधियों में सुधार कर सकता है। तथा वह विद्यार्थीयों की शैक्षिक उपलब्धि व अधिगम अनुभवों का वास्तविक मूल्यांकन करने में भी सक्षम रहता है।

classmate

Date ______
Page ______

आन्तरिक व सतत प्रणाली का समन्वित व एकीकृत रूप यू.जी.सी., नई दिल्ली (1973) परीक्षा में सुधार हेतु प्रस्तावित किया गया था। इस प्रस्ताव हेतु प्रत्येक विद्यार्थी का प्राथमिक शिक्षा से ही संचयी आलेख पत्र होना आवश्यक है तथा यह आलेख प्रत्येक विद्यार्थी के गुण-अवगुणों, उपलब्धियों, अनुपलब्धियों का दर्पण होता है।

17/06/2021

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया